International Journal of Applied Research 2018; 4(2): 236-237

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(2): 236-237
www.allresearchjournal.com
Received: 23-12-2017
Accepted: 29-01-2018

विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Correspondence
विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

लिलीरेक साहित्यमे नारी चेतनाक स्वर

विजय शंकर पंडित

सारांशः
लिलीरेक कथा, उपन्यास ओ हुनक विविध साहित्यमे स्वाभाविक रूपमे मिथिलाक नारीक यथार्थ जीवनक स्वर रहैत अछि। ओ अपन कथा–उपन्यासमे संभ्रात परिवारक बहुआसिनक वर्णन सेहो करैत छथि, राजामाताक सेहो वर्णन करैत छथि, दाइ–बहिनदाइ आ ननदि–भाउजक सेहो वर्णन करैत छथि आ तकरा लागल खबासिनी–नौड़ीक सेहो वर्णन करैत छथि। यैह कारण अछि जे हिनक कथामे नारीक विविध चरित्र आ स्वरूपक यथार्थ वर्णन भेल अछि।

प्रस्तावनाः
उपन्यास लेखिकक रूपमे कथाक अपेक्षा एवं आवश्यकताक अनुरूप लिलीरे उपर्युक्त नायिकाक वर्णन करैत छथि। नारीक सौन्दर्य आ स्वरूपक वर्णन मर्मस्पर्शी शैलीमे करैत छथि। हिनक कथा आ उपन्यासक विवेचनसँ स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक महिला लोकनिक अन्तः ओ बाह्य स्वरूपक वर्णन करबामे हिनक शिल्प अतुलनीय अछि। फ्रायडक मनोविश्लेषणवादमे मोनक तीन तरहक अवस्थाक वर्णन अछि– 1. चेतन 2. अचेतन 3. अवचेतन
मोनक चेतन स्थितिमे लोक प्रत्यक्ष घटनासँ जुड़ल रहैत अछि। आँखिक समक्ष सभ घटना घटैत छैक आ तकरा ओ पूर्ण चेतन अवस्थामे देखैत भोगैत अछि। अचेतन अवस्थामे ककरोसँ भेंट भेला पर ओहि व्यक्तिक व्यवहार आ स्वाभावक स्मरण अचेतनसँ होइत रहैत छैक। मुदा जीवनमे किछु एहन घटना होइत रहैत छैक जकरा ओ विसरि नहि पबैत अछि। विशेषरूपसँ दमित इच्छा मोनक अवचेतन स्थितिमे संचित भऽ जाइत छैक। ओ कदापि खतम नहि होइत छैक। ओकर प्रभाव लोकक व्यवहार पर देखल जा सकैत अछि। एहि तरहें मोनक एहि अवस्थासँ लोकक व्यक्तित्व विकसित होइत छैक। मिथिलाक नारी अधिक संवेदनशील आ भावना प्रधान होइत छथि। यैह कारण अछि जे हुनक हृदय आ मोनमे दुःख सुखक बिहारि उठैत रहैत अछि। एहि बिहारिमे मिथिलाक नारीक अनुभूति, वेदना, संवेदना, भावना आ दुःख–सुख आदिक स्वर अकानल जा सकैत अछि। मिथिलाक महिलाक मोनक बिहारिकें समेटबामे आ तकरा स्वाभाविक रूपमे लिखबामे लिलीरे निश्चित रूपें सफल भेल छथि। हिनक कथा उपन्यासमे नारीक यथार्थ, विश्वसनीय एवं प्रामाणिक जीवनक अनुभव कएल जा सकैत अछि। [1] उदाहरणस्वरूप रंगीन परदाक एक दृष्य खण्डकें प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि–
''एतबेमे तिनसुखिया गर्जति पहुँचल– हऽहऽ, सउंसे तकैत–तकैत हरान भ' गेलहुँ आ' अहाँ इयाह एतऽ गुम्मी सधने छी।
हम त' फूल बीछऽ आयल रही, तिनसुखिया!
ताँ रबरक साँप देखने छहीक–कहि ओ मोहनजी दिसि तकलन्हि। आर मोहनजी। आर मोहनजी ओकर अभिप्राय बुझि चट द' डाँड़सँ लपटाओल सांप तिनसुखिया दिसि फेकि देलथिन।
गे दाइ।
आर एहि बेर मोहनजीक संग–संग मालती सेहो हँसि उठलीह।
तिनसुखिया अपन आँखिया अपन आँखिकें विस्फारित करैत बाजलि– देखियौक ऐ! अनमन जेना साँपे रहै। जीह सेहो बना देलकैक अछि।
अपना गाममे ककरों छैक?
अपन गाम भेल गरीबहा लोकक आर ई थिकैक राजाक घर। अपना गामसँ एकर कोन तुलना? [2]
अही गाममे ई डयोढ़ी छोड़ि ककरा छैक? कुमरजी! अहाँ एतऽ छी? ओतऽ बड़ी रानीजी खोज करैत छथि। मास्टर साहेब बजा पठौलन्हि अछि। ओ! आर मोहनजी साँपकें फेर डाड़मे बान्हि चल जाइत रहला। मालती हतबुद्धि भेल तिसुखियासँ पुछलथिन– ऐं गे, तों हिनका कोना चिन्हलहुन? भरिदिन हवेलीएमे नुड़ियाइत छथि आ हमही नहि चीन्हबन्हि। अहाँ हमरा बुझैत की छी? [3]
हम कत' हवेलीमे हिनका देखलियन्हि?
मर्रर! सदिखन अपना माइक पाछूदृपाछू घुसकति रहति छथि आ अहाँ देखबे नहि कयलियन्हि। एहेन अनटोटल कथा कोना बजना जाइ अछि।

मालती चुप भय गेलीह। सभकें सभ देखि चुकलैक, एकटा मालतीकें छेड़िकऽ, मुदा आब त मालती सेहो देखि चुकलीह।
बहुत सुन्दर। –मालती जेना स्वप्न देखैत बजलीह।
अः कोनो तरहें ई काज भ' जाय। आर महाकान्त अधीर भ' घरक अहि कोन सऽ ओहि कोन धरि बुलय लगलाह। [4]
मालती फेर अपन स्वप्नमे लीन भ' गेलीह....
फुलवारीक सुखायल दूबिमे जेना फेरसँ प्राण आबि गेल हो। पोखरिक जलमे नहुं–नहुं कम्पन होबऽ लगलैक। पादप झूमि उठल जेना अपना अंगमे भास्करक वासक भयसँ नुकायल लताकें झकझोरति कहति हो– उठ, आब फेर समर्थ हो, फेर फूलाह आर फेर अपन परिमल बिचार। मेघ आबि गेलैक अछि। मेघ संकेत पबितहि पिंजरामे बन्द मयूर नाचि उठल। पारिनमे हंस कलरव करयल लागल। हवा अपन उष्णता त्यागि शीतल भ' गेल। आकाश मंडलपर मन्द–मन्द मेघ आबि रहल छलैक आर एकर स्वागतक हेतु समस्त वन पुलकभरि झूमि रहल छल। मालती आर तिनसुखिया पिंजरामे बन्द मयूरक नृत्य देखि रहल छलीह। [5]

निष्कर्षः

मालती विस्फारित नेत्रसँ मोहनजी तकलन्हि। मोहनजी मुसकि रहल छलाह। हुनकर आँखि भरल छलन्हि आर ओहिमे छलकति मालतीक छवि। ई घटना मालतीके जेना जड़ बना देलकन्हि। मोहनजीकें उत्तरमे की बाजी से किछु फुरबे नहि कयलन्हि। प्रायः किछु बाजी सैह नहि मोनमे अयलन्हि। ओ त' सर्वाङ्ग शून्य भ' गेल छलीह ओहि काल। मोहनजी मालतीक हाथ अपनामे लैत पोखरि दिसि इंगित करैत बजलाह– देखू! आर मालती कठपुतरी जकाँ ओही दिसि देखऽ लगलीह।
पूर्ण प्रस्फुटित कमलक फूल। हृदय पराग उभरि आयल छलैक। भरल मधुसँ लबालब। ओकर प्रत्येक पुष्पक पत्र–दल जेना कोनो सैनिक रक्ताभ श्वेतवस्त्रमे मधुकें भ्रमरसँ बचेबा ले प्रस्तुत रहैक। चतुर भ्रमर उपरहिसँ ओहिमे पैसि गेल। दू चारि भ्रमर सेहो गुन–गुन करैत ओहिमे जयबाक रास्ता तकैत छल। वैह देखू भ्रमर! जनैत छी भ्रमर कमरपर कियैक आयल अछि।

संदर्भ सूची :

1. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 161
2. लिलीरे, रंगीन परदा, 2017, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसब पाही, मधुबनी, पृ.– 22
3. तथैव, पृ.– 23
4. तथैव, पृ.– 24
5. तथैव, पृ.– 25